rajaaBaaja Wara ricat ॠalgaarmaHjarlkqaa mal yan~lyaQaaragalh

(Presented in All India Oriental Conference, University of Madras, Chennai, 2000)

— आयशा अनवर
शोध–छात्रा, संस्कृत विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

भोजराजकृत शृंगारमञ्जरीकथा १०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित कथासाहित्य में एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। भोजकृत समरांगणसूत्रधार अध्ययन से यह अति स्पष्ट होता है कि भोज वास्तुकला के पारखी थे और साथ ही साथ एक कुशल निर्माता भी थे। शृंगारमञ्जरीकथा में भी विविध प्रकार के वर्णनों का अपना एक अद्भुत चित्रण मिलता है। इस ग्रन्थ में धारा नगरी जो कि भोजराज की राजधानी रही उसका भी एक विस्तृत एवं भव्य वर्णन उपलब्ध होता है। धारा नगरी में यन्त्रीय धारागृह का वर्णन अपने आप में एक अनूठा वर्णन है। प्राचीनकाल में राजाओं के प्रासादों में, रनिवास में तथा उद्यान आदि में अनेक प्रकार के धारागृह होते थे जैसे कि इतिहास के ग्रन्थों से हमें जानकारी मिलती है। संस्कृत साहित्य में वाणभट्ट की कादम्बरी, यशस्तिलकचम्पू तथा धनपाल की तिलकमंजरी आदि अनेक प्रमुख ग्रन्थों में यन्त्र–धारागृह का वर्णन उपलब्ध होता है, किन्तु भोज रचित शृंगारमञ्जरीकथा में यन्त्र–धारागृह कुछ अद्भुत ही प्रतीत होता है। यन्त्र–धारागृह वस्तुतः ग्रीष्मकाल में तीक्ष्म ग्रीष्म से छुटकारा दिलाने वाले साधन थे और इसका निर्माण अत्यन्त कुशल वास्तुशिल्पकारों द्वारा ही किया जाना सम्भव था।

प्रस्तुत लेख में कादम्बरी, यशस्तिलकचम्पू तथा तिलकमंजरी में उपलब्ध यन्त्रधारागृह के वर्णन से तुलना करते हुए शृंगारमञ्जरीकथा में उपलब्ध यन्त्रीय धारागृह के वर्णन की क्या अनुपम विशेषताएँ हैं, इसका विवेचन किया जाएगा। धारानगरी में यन्त्रीय धारागृह जनता के आकर्षण का केन्द्र था। यह यन्त्रीय धारागृह अत्यन्त शीतलता प्रदान करने वाला होता था। मुख्य रूप से यह ग्रीष्म काल के लिये निर्मित होते थे। इनकी वनावट इतनी व्ययपूर्ण होती थी कि सामान्य जनता के लिए इसका निर्माण लगभग असम्भव था। शृंगारमञ्जरीकथा के आरम्भ में भोज तथा उनके साथी को, प्रमदवन के मध्य चन्द्रकान्तमणि निर्मित धारागृह के मध्य भाग में बैठे हुए दर्शाया गया है।[१] यन्त्रीय धारागृह का निर्माण इस प्रकार किया जाता था कि सूर्य की किरणों का प्रवेश न हो सके। विरहीजन विरहाग्नि का शमन करने के लिए यहाँ आया करते थे। यन्त्रीय धारागृह के भीतर जल स्रोत के लिए अनेक प्रकार के याँत्रिक उपाय अपनाये गये थे। शृंगारमञ्जरीकथा में इसका निर्माण काले पत्थरों से बताया गया है। इसके निर्माण में अन्य रत्नों की अपेक्षा मरकतमणि का प्रयोग किया जाता था।

---

[१] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० १,
वसितप्राये वसन्तसमये ....प्रमदवनमध्यवर्तिनो धारागृहस्येन्द्रमणिमणीं मध्यभूमिकामध्यासीनः कति परौर्विद्धभिराप्तैः प्रणयिभिर्नृपतिभिश्चोपास्यमानचरणकमलो महाराजाधिराजपरमेश्वर श्री भोजदेवः सविनयं प्रार्थ्यत.........प्रशस्तगीर्वाणः।

यन्त्रीय धारागृह के भीतर जल स्रोत के अनेक याँत्रिक उपाय थे। जल आकर्षक छिद्रों जैसे मकर के नेत्रों के किनारों से, अधोमुखी मयूरी के मुख से, कहीं मणिमय यन्त्रपुत्रिका के वक्षःस्थल से, कहीं शीघ्र ही स्नान करके निकली हुई सुवर्णमयी यन्त्रपुत्रिका के केशों के छोरों से, कहीं मणिनिर्मित यन्त्रपुत्री के नख एवं मुख से, कहीं कृत्रिम वक्ष पर चढ़ते हुए वन्दरों के मुखविवर से निकलता हुआ दर्शाया गया है।[२] यन्त्रीय धारागृह के स्तम्भों पर शाल भंजिकाएँ निर्मित होती थी। स्तम्भ के शीर्ष पर भारपुत्रकों की ऐसी आकृति वनाई जाती थी मानो सारी छत का भार उन्हीं के सिर पर हो। स्तम्भों पर निर्मित शाल भंजिकाएँ विभिन्न प्रकार के रत्नों से निर्मित होने पर भी केवल एक ही रत्न से निर्मित प्रतीत होते थे, क्योंकि वे (रत्न) परस्पर सुसंगठित, तथा दृढ़ सन्धि वाले होते थे।

यन्त्रीय धारागृह में ही छोटे तडाग एवं पुष्कारिणियाँ भी थे। उनमें कृत्रिम मछली, नकली वगुलों का पीछा करती हुई दिखाई गई थी तथा कहीं पर यन्त्रनिर्मित कछुए डूवते उतरते थे। कहीं पर देखने की इच्छुक मछलियाँ कुछ डरती हुई जल में पैरों को रखती हुई यन्त्रमकर को देखती थी।[३] यन्त्रीय धारागृह अत्यन्त शीतल रहता था। उसकी शीतलता की अधिकता से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कर्पूर चूर्ण से निर्मित हो, अथवा वर्फ के टुकड़ों से वना हो अथवा चन्द्रमा की कलाओं से इसका निमार्ण किया गया हो।[४] यहाँ पर भोज ने एक ही स्थान पर शीतलता प्रदान करने वाली तीनों वस्तुओं से धारागृह की शीतलता सिद्ध की है। ग्रीष्म की प्रदान सूर्यप्रखर किरणों से आप्त व्यक्ति जव आकाश में काले वादल की छटा देखता है, तव उसे आनन्द की अनुभूति होती है। वर्षा ऋतु का आभास मात्र उत्पन्न करने के लिए यन्त्रपुत्रिका द्वारा पटह वजाने की भी व्यवस्था थी, जिससे विजली की गड़वड़ाहट का भ्रम होता था। इस प्रकार यन्त्रीय–धारागृह में वर्षाकाल के सभी लक्षण प्रस्तुत करने के प्रयास किए गए थे। एक ओर तो मरकतमणि से निर्मित होने के कारण चारों ओर अन्धकार था, तो दूसरी ओर यन्त्रपुत्रिका द्वारा पटह वजाकर विजली की गड़वड़ाहट की ध्वनि उत्पन्न की जाती थी एवं चारों ओर से निरन्तर प्रसावित जल की धारा से वर्षाकाल का आभास होता था।

---

[२] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० ६,
क्वचित पत्रमकरिकानेत्रप्रान्तेभ्यः, क्वचिदधोमुखमयूरीमुखेभ्यः क्वचिन्मणिमययन्त्रपुत्रिकापयोधरद्वन्द्वेभ्यः, क्वचिन्मञ्जनोत्तीर्णस्वर्ण–पुत्रिकानिश्चोत्यमानकवरीवालकलापप्रान्तेभ्यः,
क्वचिन्मणिमयविलासिनीनखमुखेभ्यः, क्वचितप्ररूदितवा, क्वचित् यन्त्रवृक्षकं प्रत्यावद्धाफलस्य कपिकुटुम्वकस्य वदनविवरेभ्यः.....।

[३] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० १,
क्वचिदङ्गणवापिका पुष्करिणीनामन्तरून्मञ्जन्निमञ्जन्तीभिर्वालशफरिकाभिर्वि प्रलभ्यमानकृत्रिमवककुटुम्वकम्, क्वचिदनिमञ्जनोन्मञ्जनैः दृश्यादृश्यवाल यन्त्रकमठम, क्वचिद दिदृक्षारसकुतूहलाकुलिताताभिरपि
मत्स्यङ्गनाभिरनिक्षिपन्तीभिश्चारणकमलमीषत्रासादिवावलोक्यमानोन्मज्जद् यन्त्रमकरम्।

[४] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० ५,
यस्यां च.....अतिशिशिरतया कर्पूरक्षोदैरिव निर्म्मितम्,
हिमानीभिरिव विरचितम्, हिमाशुशकलैरिव निष्पादितम्।

जल की बड़ी–बड़ी एवं लगातार गिरती हुई बूदों को देखकर मोर वर्षा के भ्रम से भ्रमित होकर प्रसन्नचित होकर नृत्य करने लगते थे।[५] कहीं विकसित कनेर पुष्प पर काली मणि निर्मित भ्रमरजोड़े गुंजन कर रहे थे। कहीं पर दिन में भी रात्रि के भ्रम से प्यासे चकोर अपनी चोंच खोलकर स्फटिक स्तम्भों की कान्ति के पान का प्रयास कर रहे थे।[६] कहीं–कहीं धरातल से, दीवारों से, मणिनिर्मित पुत्रिका से, कहीं स्तम्भ से, एवं कहीं स्तम्भ के शीर्ष भाग से जल स्रोत फूटते नज़र आ रहे थे। रक्तमणि द्वारा सूर्य की किरणों का भ्रम दिलाकर कमलिनी को विकसित करने का दृश्य भी दर्शाया गया था। इन मनोरम दृश्यों को स्तम्भ के शीर्ष भाग पर निर्मित भारपुत्रक अपलक नेत्रों से देख रहे थे। यन्त्रसार (नकली नटों) का तौर्यत्रिक (गायन, वादन तथा नृत्य) चतुरों को भी चकित कर देता था जिनका उपहास करने के लिए भित्ति पर श्वेत सरोज लगा था।[७] कहीं पर खिले सरोज के मध्य मणिनिर्मित हँसी उठती जलधारा को विस की भ्रम में पकड़ना चाहती थी तो कहीं मणिनिर्मित यन्त्रपुत्रिका नकली मैना को नृत्य करा रही थी।[८]

---

[५] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० ६,
.....उत्पत्य निपतन्तीनां सलिलधाराणां स्फुटितस्थूलानवरतनिपतञ्जलकणतया अपरमिव मुताकरमुत्पादयत् मरकतमणिप्रभाश्यामलितगगनतया यन्त्रपुत्रकप्रहतमुरजोन्मुक्तमन्त्रमधुरध्वानतया अनवरतनिपतत् सलिलधारान्धकारितदिगन्तरतया च जनितजलभ्रमान आवद्धमण्डलान उपवनशिखण्डिनस्ताण्डवगद।

[६] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० ६,
.....क्वचिद् विकचसौगन्धिककर्णिकाभ्यर्णवर्तिभिरसित मणिनिर्मितै र्गुञ्जदिभ यन्त्रमधुकरमिथुनैर्गायदिव, क्वचिद् दिवापि चन्द्रातपभ्रमान्तर्षतरलितमनोर्भिर्विवृतचञ्चुपुटैरूपवनचकोर कैराचभ्यमानस्फटिक स्तम्भकान्तिसन्तानम्.....।

[७] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० ७,
.....क्वचिदन्तःस्थितानि भित्तिकमलिनीकुडलानां विकासार्थ बालातपच्छेदनिव शोणमणिकिरणजालकान्युद्वहत, परस्परप्रतिफलितमूर्तितयासम्भूयमेव भारसमुद्वहदिभरन्योन्यकल्पिता–वष्टम्भैर्मणिस्तम्भैरध्यासितमध्यभागम्, अतिमनोरमतया, कौतकाक्षिप्तहृदयैरिवानिमेषदृष्टिभिः परितो भारपुत्रकैरप्यवलोक्यमानम्, विचित्र तौर्यत्रिकमारचयदिभर्यन्त्रचारैरतिविदामपि चित्तभ्रममुत्पादयद्, विचित्रयन्त्रदर्शनोद्भान्तचेतसो भित्तिघटितविकसितसितसरोजव्याजादुपहसदिवातिविचक्षणनपि प्रेक्षकान्.....।

[८] शृंगारमञ्जरीकथा, पृ० ६,
.....क्वचिद् विकचकृत्रिमाम्भोजिनीमध्यमध्यासी नाभिर्धवलमणीमयीभिमुग्धमरालिकाभिः विसकाण्डभ्रमादिव विदस्यमान्धाराणालम्, क्वचिद् विकचकुमुदकाननच्छलेन हसदिव, क्वचित् क्रीडासारिकोल्लासितभुजलताभिर्मणियन्त्रपुत्रिकाभिनृत्यदिव।

वाणभट्ट की कादम्वरी में नायिका के शीतोपचार के साधनों में हिमग्रह का वर्णन प्राप्त होता है। यन्त्रधारागृह हिमग्रह का एक विशेष भाग था। कादम्वरी में यन्त्रमयूर एवं मृणालधारागृह का भी उल्लेख प्राप्त होता है—

(शिरीषपक्ष्मकृतशाद्वलानां मृणालाधारागृहाणां शिखरमारोप्यमाणानां धाराकदम्वधूलिधूसरितानि यन्त्रमयूरकाणां कदम्वकानि)।

यन्त्रमयूर का अर्थ पत्थर या धातु से निर्मित मोर है। उनके मुख से चारों ओर पानी की धाराएँ छूटती थी। जल की धारा उछल कर जहाँ छूटती थी, उस पानी भरे स्थान में कमल लगे थे इसी कारण मृणालधारागृह की संज्ञा दी गई। जल की वूँद झाड़ने वाले कृत्रिम वृक्ष एवं यन्त्रसंचालित कृत्रिम पक्षियों के शरीर से जलधारा छूटने का भी उल्लेख आया है—

" क्वचिन्मुक्ताफलक्षोदरचितालवालकाननवरतस्थूलजलविन्दुदुर्दिनमुत्सृजतो यन्त्रवृक्षकान,
क्वचिद्विद्युतपक्षनिक्षिप्तसीकरनीतनीहारा भ्रमन्तीर्यन्त्रमयीः पत्रशकुनिश्रेणीः।"

जलयन्त्र के चलने से अतिशील धाराएँ छूटने लगती थी ः
" जलयन्त्रधारासहस्रमुत्सारितैरतिशीतस्पर्शभयनिवृत्तैरिव परिहृतम्।"